5 जनवरी, 2010 को जाम्बिया के उपराष्ट्रपति द्वारा आयोजित भोज के अवसर पर भारत के माननीय उपराष्ट्रपति श्री मो. हामिद अंसारी का भाषण

सबसे पहले मैं यह कहना चाहूंगा कि आपके इस सुदंर देश में आकर मुझे और मेरी पत्नी को बहुत खुशी हुई है। मैं जाम्बिया की सरकार और जनता के लिए भारत की सरकार और वहां की जनता की शुभकामनाएं लेकर आया हूं।

मेरी पत्नी और मैं तथा वास्तव में मेरा पूरा शिष्टमंडल, हमारे यहां पहुंचने से अब तक की गई शानदार आवभगत की भरपूर सराहना करते हैं।

जाम्बिया के समृद्ध इतिहास और सांस्कृतिक विरासत तथा उत्तरी एवं दक्षिणी अफ्रीका (पैन-अफ्रीका) और क्षेत्रीय संगठनों में जाम्बिया की अग्रणी भूमिका के लिए हम भारतीय इसकी सराहना करते हैं। जाम्बिया इस बात का उदाहरण है कि बहुल लोकतांत्रिक राज व्यवस्था में लोग किस प्रकार शांतिपूर्वक रहते हुए विकास कर सकते हैं।

दक्षिणी अफ्रीका और अन्य विकासशील देशों के लिए स्वाधीनता, समानता, मानव अधिकारों, स्वतंत्रता और लोकतंत्र हेतु लड़ाई में जाम्बिया और भारत ऐतिहासिक रूप से निकट सहयोगी रहे हैं।

उपनिवेशवाद की समाप्ति और रंगभेद एवं जातीय असमानताओं के खिलाफ लड़ाई में हमारे समर्थन ने एक अधिक न्यायसंगत तथा समान अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था बनाने में योगदान दिया है।

लोकतांत्रिक शासन प्रणाली और बहु-जातीय एवं बहु-धार्मिक समाजों को प्रोत्साहन देने की हमारी पारस्परिक प्रतिबद्धता क्षेत्रीय शांति और वैश्विक स्थिरता का आधार रही है।

हमारा निकट संबंध क्षेत्रीय और संयुक्त राष्ट्र, गुट-निरपेक्ष आंदोलन, एस ए डी सी, सी ओ एम ई एस ए और अफ्रीका संघ सहित वैश्विक मंचों तक बढ़ा है।

जाम्बिया के साथ हमारी भागीदारी अफ्रीकी देशों के साथ घनिष्ठ सहयोगपूर्ण और बहु-क्षेत्रीय साझेदारी के व्यापक दृष्टिकोण का एक महत्वपूर्ण घटक है जिसमें राजनीतिक, सुरक्षा, आर्थिक, विज्ञान और प्रौद्योगिकी, मानव संसाधन विकास और सांस्कृतिक क्षेत्र शामिल हैं।

भारत-अफ्रीका भागीदारी समानता, पारस्परिक सम्मान और हमारे पारस्परिक हित के लिए हमारे लोगों के बीच आपसी समझदारी के बुनियादी मूल्यों पर आधारित है। इस भागीदारी के पांच मूलभूत सिद्धांत हैं:-

- राज्यों की स्वाधीनता, संप्रभुता और देशीय अखंडता के प्रति सम्मान और अफ्रीका के एकीकरण की प्रक्रिया को बढ़ाने के प्रति प्रतिबद्धता;
- शांति, सहिष्णुता और धार्मिक, सांस्कृतिक, भाषायी एवं जातीय विविधताओं और साथ ही स्त्री-पुरूष समानता के प्रति आदर की संस्कृति को बढ़ावा देना;
- अफ्रीका में वर्तमान/उप-क्षेत्रीय उपायों के पूरक और उनका निर्माण करते हुए अंतरा-क्षेत्रीय/उप-क्षेत्रीय एकीकरण का विकास;
- विभिन्न सामाजिक और आर्थिक व्यवस्थाओं और विकास के स्तरों सहित क्षेत्रों के बीच और उनमें विविधता को मान्यता; और
- बहुल लोकतांत्रिक व्यवस्था का विकास और समेकन।

भारत और जाम्बिया आज अंतर्राष्ट्रीय समुदाय के सामने मौजूद प्रमुख मुद्दों पर समान दृष्टिकोण रखते हैं। हम वैश्विक शांति और सुरक्षा को बनाए रखने, संयुक्त राष्ट्र संबंधी सुधारों, वैश्विक निरस्त्रीकरण, आतंकवाद के विरूद्ध संघर्ष, एक निष्पक्ष और समानतापूर्ण वैश्विक व्यापार व्यवस्था और जलवायु परिवर्तन के दुष्परिणामों से निपटने के लिए एक साथ मिलकर काम करने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

हमारे दोनों देश यह सुनिश्चित करना चाहते हैं कि इन सभी मामलों में विकासशील देशों के हितों को सर्वोपरि रखा जाए और हमारे देशों की सामाजिक-आर्थिक विकास संबंधी आवश्यकताओं को सुनिश्चित किया जाए। एक परिवर्तनशील अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था में जिम्मेवार राष्ट्रों के रूप में हम समानतापूर्ण प्रतिनिधित्व के आदर्शों को पोषित करने, अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं के लोकतंत्रीकरण तथा हमारी जरूरतों के अनुरूप अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था विकसित करके अपने विकास के संघर्ष को जारी रखने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

भारत और जाम्बिया के बीच द्विपक्षीय संबंध बहुआयामी क्षेत्रों में विकसित हुए हैं। आर्थिक, वाणिज्यिक और तकनीकी क्षेत्रों में सहयोग बढ़ रहा है। इसे और सक्रिय बनाए जाने की जरूरत है। हमें अपनी सहक्रियात्मकता और सम्पूरकताओं का दोहन करने और कृषि, सिंचाई, व्यापार, निवेश, विद्युत, लघु और मध्यम आकार के उद्योगों, शिक्षा, दूरसंचार और पर्यटन के क्षेत्रों में मौजूद सहयोग के विशाल अवसरों का उपयोग करने की जरूरत है। हमें इस संभावना को पूर्णरूप से साकार करने और अपने आर्थिक सहयोग को और अधिक मजबूत करने के लिए सरकारी और निजी क्षेत्रों की भागीदारी को बढ़ावा देंगे।

अप्रैल 2008 में नई दिल्ली में पहली बार आयोजित हुए भारत-अफ्रीका मंच के शिखर-सम्मेलन में महामहिम राष्ट्रपति रूपिया बांदा की सम्मानजनक उपस्थिति से

हमने स्वयं को सम्मानित महसूस किया। हम चाहेंगे कि जाम्बिया दोनों देशों के बीच व्यापार को बढ़ावा देने के लिए विशेषकर सस्ती दरों पर ऋण के संबंध में भारत-अफ्रीका मंच सम्मेलन में घोषित की गई नई पहलों का लाभ उठाए। जाम्बिया की कंपनियां भारत से प्रौद्योगिकी, उपस्कर और परामर्श सेवा की खरीद के लिए वित्तपोषण हेतु सीओएमईएसए पीटीए बैंक के माध्यम से भारत द्वारा प्रदान की गई निधियों को भी प्राप्त कर सकती हैं।

भारत सरकार ने 2008 में, इतेझी तेझी जलविद्युत परियोजना के लिए 50 मिलियन अमरीकी डालर के ऋण को अनुमोदित किया है। हम जाम्बिया के विकास में योगदान देने वाली अवसंरचनात्मक और औद्योगिक परियोजनाओं के लिए ऋण प्रदान करने की अपनी प्रक्रिया जारी रखेंगे। भारत सरकार जाम्बिया में सामाजिक क्षेत्रों हेतु अर्थात् कृषि, स्वास्थ्य और शिक्षा क्षेत्रों से संबंधित परियोजनाओं के लिए भी अनुदान उपलब्ध कराएगी। यह जाम्बिया की जनता और सरकार के साथ सहयोग और भागीदारी करने संबंधी हमारी प्रतिबद्धता का संकेत है।

पिछले महीने जाम्बिया में अपने सफल प्रचालन के 25 वर्ष मनाने वाला इण्डो-जाम्बिया बैंक, हमारे दो दूरदर्शी नेताओं, डा. कैनेथ कौंडा और श्रीमती इन्दिरा गांधी के दिमाग की उपज था।

हाल में शुरू की गई हमारी पैन-अफ्रीकन ई-नेटवर्क परियोजना दक्षिण-दक्षिण सहयोग का एक अन्य मील का पत्थर है। इस परियोजना से टेली शिक्षा व टेली चिकित्सा सेवाओं और अफ्रीका के सभी राज्याध्यक्षों के साथ टेली-कॉन्फ्रेंसिंग में सुविधा होगी। यह हमारे प्रौद्योगिकीय विकास के लाभों को अफ्रीका के हमारे साझेदारों तक पहुंचाने के प्रयासों का एक उदाहरण है।

मुझे यह जान कर खुशी हो रही है कि जाम्बिया हमारे आईटीईसी कार्यक्रम का एक बड़ा लाभार्थी रहा है और अभी तक इसके लगभग 2300 नागरिकों को भारत में प्रशिक्षित किया जा चुका है। साथ ही, जाम्बिया के कई रक्षा प्रमुखों तथा 325 से अधिक अन्य रक्षा अधिकारियों को भारतीय रक्षा संस्थानों में प्रशिक्षण दिया जा चुका है। हमारे सैन्य सलाहकार दल ने लुसाका में रक्षा सेवा कमान एवं स्टाफ कॉलेज (डीएससीएससी) की स्थापना करने एवं इसके संचालन में भी सहायता की है। भारत, जाम्बिया में मानव संसाधन विकास तथा क्षमता निर्माण के प्रति प्रतिबद्ध है।

महामहिम,

जाम्बिया में 13,000 लोगों का सशक्त भारतीय समुदाय हमारे द्विपक्षीय संबंधों के एक महत्वपूर्ण पहलू का प्रतिनिधित्व करता है। यह समुदाय दोनों देशों तथा उनकी जनता के बीच सहयोग एवं मित्रता का संबंध स्थापित करने में सहायक सिद्ध हुआ है। मैं उनके प्रयासों की अत्यंत सराहना करता हूं।

मैं आशा करता हूं कि महामहिम राष्ट्रपति, महामहिम तथा जाम्बिया के माननीय मंत्रियों के साथ हमारी चर्चाओं के सकारात्मक परिणाम सामने आएंगे। मुझे विश्वास है कि दोनों देशों के बीच उच्च स्तर पर सतत विचार-विनिमय से हमारे द्विपक्षीय संबंधों को एक नया बल मिलेगा।

"मुलुंगु अदालिसे जाम्बिया" (जाम्बिया पर ईश्वर की कृपा बनी रहे)

महामहिम, देवियो और सज्जनो, मेरा आपसे अनुरोध है कि आइए हम सब मिलकर -

- महामहिम राष्ट्रपति श्री रुपिया ब्वेजनी बांदा के अच्छे स्वास्थ्य और खुशहाली;

- महामहिम उप-राष्ट्रपति जॉर्ज कुंडा एवं उनकी शालीन धर्मपत्नी, मैडम इरेन कुंडा के अच्छे स्वास्थ्य एवं कल्याण;
- दोनों देशों की मित्रवत जनता के सतत् कल्याण एवं समृद्धि; और
- दोनों देशों की सतत् प्रगाढ़ मैत्री की कामना करते हुए भोज में सम्मिलित हों।